सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या—cm-325
09/08/2017

पृथ्वी की रक्षा अपनी रक्षा ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ी की भी रक्षा है :— मुख्यमंत्री

पटना, 09 अगस्त 2017 :— मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने आज ज्ञान भवन (सम्राट अशोक कन्वेंशन केन्द्र) में बिहार पृथ्वी दिवस 2017 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि सबसे पहले मैं इस कार्यक्रम के आयोजन के लिये सभी को बधाई देता हूँ। उन्होंने कहा कि 9 अगस्त के दिन 2011 से बिहार पृथ्वी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। बिहार पृथ्वी दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य लोगों के मन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। उन्होंने कहा कि बिहार पृथ्वी दिवस का नियमित आयोजन किया जा रहा है। छात्र—छात्राओं को प्रेरणा दी जा रही है। उन्होंने कहा कि आज जो हम सभी ने संकल्प लिया है, उसको अगर याद रखे तो पर्यावरण का जो संतुलन खो रहा है, वह विपरित दिशा में जाकर संतुलन को कायम कर देगा। उन्होंने कहा कि हमारे बचपन के समय में लोगों को पर्यावरण की इतनी जानकारी नहीं थी। उस समय नदियों का जल भी साफ था, आबादी भी कम थी। धीरे—धीरे आबादी बढ़ती गयी, विज्ञान एवं तकनीक का विकास हुआ। इस विकास का प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ा। उन्होंने आज का उदाहरण देते हुये कहा कि आज वाहनों की संख्या इतनी बढ़ गयी है। दिल्ली को देखें तो अब पहले जैसी स्थिति नहीं है। अब दिल्ली में इतनी भीड़ है, पटना में भी कितनी ज्यादा वाहनों की संख्या हो गयी है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर हमलोग दवाब बनाते जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 9 अगस्त को भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरूआत की गयी थी। राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो— करो या मरो का नारा दिया था। उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात भी कही थी कि पृथ्वी मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है लेकिन उनकी लालच को नहीं। लालच की जो प्रकृति बढ़ती जा रही है, उस पर रोक लगाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि झारखण्ड से अलग होने पर बिहार का हरित आवरण 9 प्रतिशत से भी कम हो गया था। इस विषय पर अध्ययन किया गया, पूरी जानकारी ली गयी। बिहार को देखते हुये यह पाया गया कि अधिकतम हरित आवरण 17 प्रतिशत हो सकता है। इसे देखते हुये संकल्प लिया गया, यह तय किया गया कि 2012 से 2017 तक 15 प्रतिशत हरित आवरण कर लिया जायेगा। उन्होंने कहा कि 18 से 19 करोड़ पेड़ लगाये जा चुके हैं, उसका सर्वेक्षण भी कराया जा रहा है और हमें पूरी उम्मीद एवं विश्वास है कि हम 15 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करेंगे। हमें इस लक्ष्य को और दो प्रतिशत बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि इसके लिये लोगों के बीच जागरूकता पैदा की जा रही है। उन्होंने कहा कि जितने भी सरकारी संस्थान हैं, उसमें पेड़ लगाये जायेंगे। हम रक्षा बंधन के दिन पेड़ को राखी बॉधते हैं और पेड़ों की रक्षा का संकल्प लेते हैं, हमें पेड़ों की देख—रेख करनी चाहिये। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं श्री एम0एस0 स्वामीनाथन को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने बिहार की पहल की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के प्रति नई पीढ़ी को ज्यादा जागरूक करना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा जब आती है तो उससे बचने के लिये भी लोगों को जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ठनका या वज्रपात के मामले बढ़ गये हैं। कई

राज्यों में इसके पूर्वानुमान पर काम हो रहा है। बिहार में भी हम उस तकनीक को अपनायेंगे। तकनीक के माध्यम से वज्रपात के तीस मिनट पूर्व पता चल जाता है कि किस क्षेत्र में वज्रपात होगा। उन्होंने कहा कि भूकम्प के संदर्भ में कोई भी पूर्वानुमान संभव नहीं है। हम भूकम्प के दौरान बचाव के लिये स्कूल में बच्चों को जागृत करने हेतु ओरिएन्टेशन कार्यक्रम चला रहे हैं। स्कूली छात्र–छात्राओं को अगर पूरी जानकारी होगी, वे पूरी तरह प्रशिक्षित होंगे तो वे अपने माता–पिता एवं पास–पड़ोस के लोगों को भी बतायेंगे तथा उन्हें भी जागृत करेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार पहला राज्य है, जिसने डिजास्टर रिस्क रिडक्शन के लिये रोडमैप बनाया है। गंगा नदी के संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि गंगा नदी की अविरलता एवं निर्मलता के लिये केन्द्र और राज्य सरकार दोनों ही प्रतिबद्ध है। गंगा में हो रही सिल्ट डिपोजिशन पर अध्ययन करने के लिये टीम बनायी गयी है। उन्होंने कहा कि गंगा नदी में गाद प्रबंधन के लिये सिल्ट हटाने से ज्यादा जरूरी नदी के प्रवाह के साथ सिल्ट बहता जाय है। उन्होंने कहा कि गंगा नदी में जल का प्रवाह होना चाहिये। गंगा नदी का फ्लो जारी रहना चाहिये। उन्होंने कहा कि गंगा नदी की अविरलता पर दो सम्मेलन एक पटना और एक दिल्ली में आयोजित किया गया था, जिसमें देश भर के विशेषज्ञों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि अगर हम गंगा नदी की निर्मलता को बनाये रखना चाहते हैं तो यह देखना होगा कि गंगा नदी में गंदा पानी और कचरा न जाय। उन्होंने कहा कि हम गंगा नदी के किनारे जैविक कृषि को बढ़ावा देंगे। नाली के पानी का ट्रिटमेंट कर उसका उपयोग खेती के लिये किया जायेगा। लावारिस पशु के संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि लावारिस पशुओं को पकड़कर गौशाला में रखा जा रहा है। उनका भरण पोषण किया जा रहा है। पशुओं के गोबर एवं मूत्र का उपयोग जैविक कृषि में किया जायेगा। उन्होंने कहा कि कृषि रोड मैप में भी जैविक कृषि को बढ़ावा दिया जायेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिजली का दुरूपयोग नहीं करें। सरकार सोलर ऊर्जा पर बल दे रही है। दो स्थानों– कजरा एवं पीरपैंती में सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन का प्लांट लगाया जायेगा। मुख्यमंत्री ने बिहार पृथ्वी दिवस के अवसर पर ली गयी संकल्प के सभी 11 बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की, यथा– पर्यावरण संतुलन के लिये प्रयास, वर्ष में कम से कम एक पौधा लगाना, तालाब, नदी, पोखर को प्रदूषित नहीं करना, जल का दुरूपयोग नहीं करना, बिजली का सही उपयोग करना, कूड़ा–कचरा इधर–उधर नहीं फेंकना, प्लास्टिक, पॉलिथिन का उपयोग बंद करना, पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम का भाव रखना, नजदीक का कार्य पैदल या साइकिल से करना एवं कागज का दुरूपयोग नहीं करना आदि। उन्होंने कहा कि धरती पर सबका अधिकार है। अगर हम संकल्प के सभी बिन्दुओं को अपनायेंगे तो जीवन आनंदमय और बेहतर होगा। उन्होंने कहा कि पृथ्वी की रक्षा अपनी ही रक्षा नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ी की भी रक्षा है। अगर दुनिया भर में पर्यावरण के संतुलन को कायम नहीं किया गया तो पृथ्वी पर जीवन को खतरा है। आज देख सकते हैं कि मौसम कितना बदल गया है। उन्होंने कहा कि बिहार तो पीड़ित क्षेत्र है। बिहार में वर्षा हो न हो, तब भी बाढ़ आ जाती है। उन्होंने कहा कि बादल पेड़ से आकर्षित होते हैं इसलिये वृक्ष लगायें। उन्होंने कहा कि लोगों के बीच जागृति पैदा करने के लिये पृथ्वी दिवस और वृक्ष सुरक्षा दिवस का आयोजन किया जाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नई पीढ़ी को मन में यह बात अपनानी चाहिये, जैसे भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान गॉधी जी ने नारा दिया था अंग्रेजों भारत छोड़ो, उसी तरह हम सब यह नारा लगायेंगे– 'लालच भारत छोड़ो', इससे समाज में प्रेम होगा, भाईचारा होगा, एकता होगी।

आयोजित समारोह को उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, शिक्षा मंत्री श्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा, एवं पर्यावरणविद् डॉ0 ज्योति के0 पारिख ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में श्री एम0एस0 स्वामीनाथन का विडियो संदेश भी दिखाया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने

डी0एफ0आई0डी0 द्वारा तैयार पुस्तक का विमोचन किया। वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा सभी अतिथियों को प्रतीक चिह्न भेंट किया गया। इस अवसर पर राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री श्री रामनारायण मण्डल, उद्योग मंत्री श्री जय कुमार सिंह, प्रधान सचिव वन एवं पर्यावरण श्री विवेक कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री चंचल कुमार, मुख्य वन संरक्षक श्री डी0के0 शुक्ला, मुख्यमंत्री के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति, वरीय अधिकारी एवं स्कूली बच्चे उपस्थित थे।

******